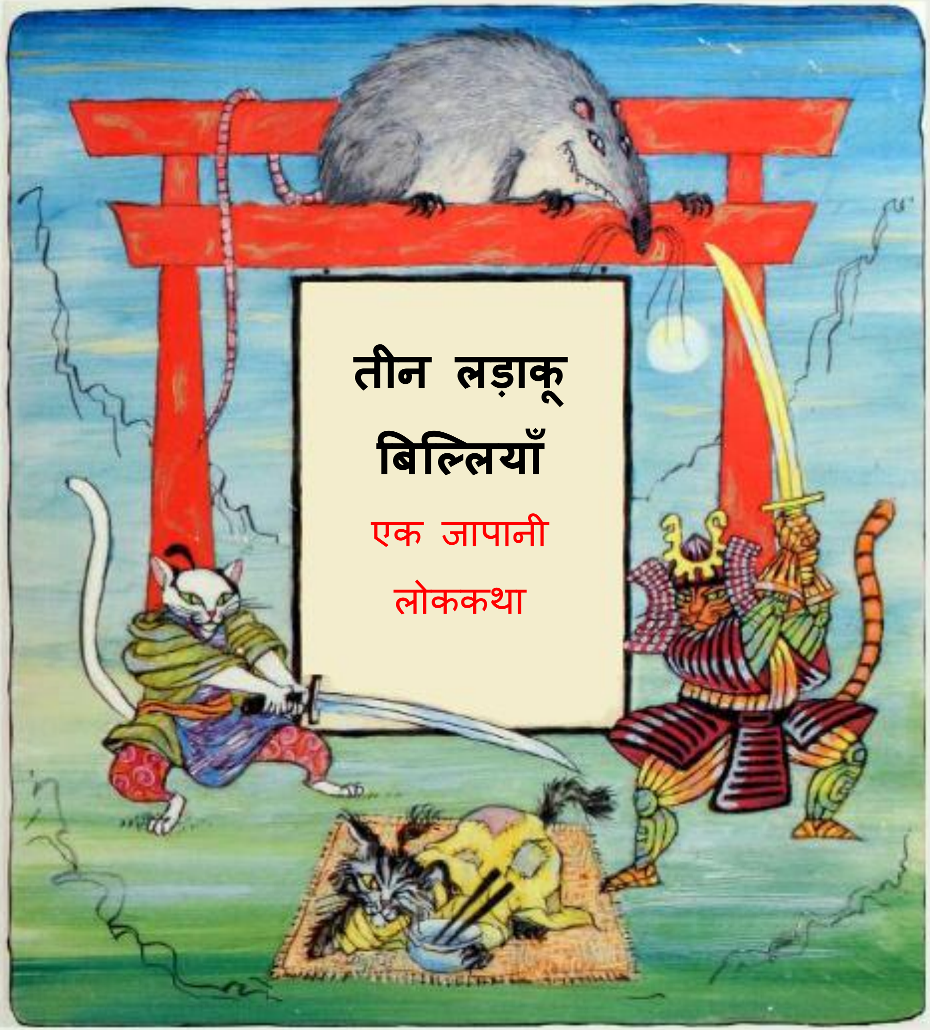
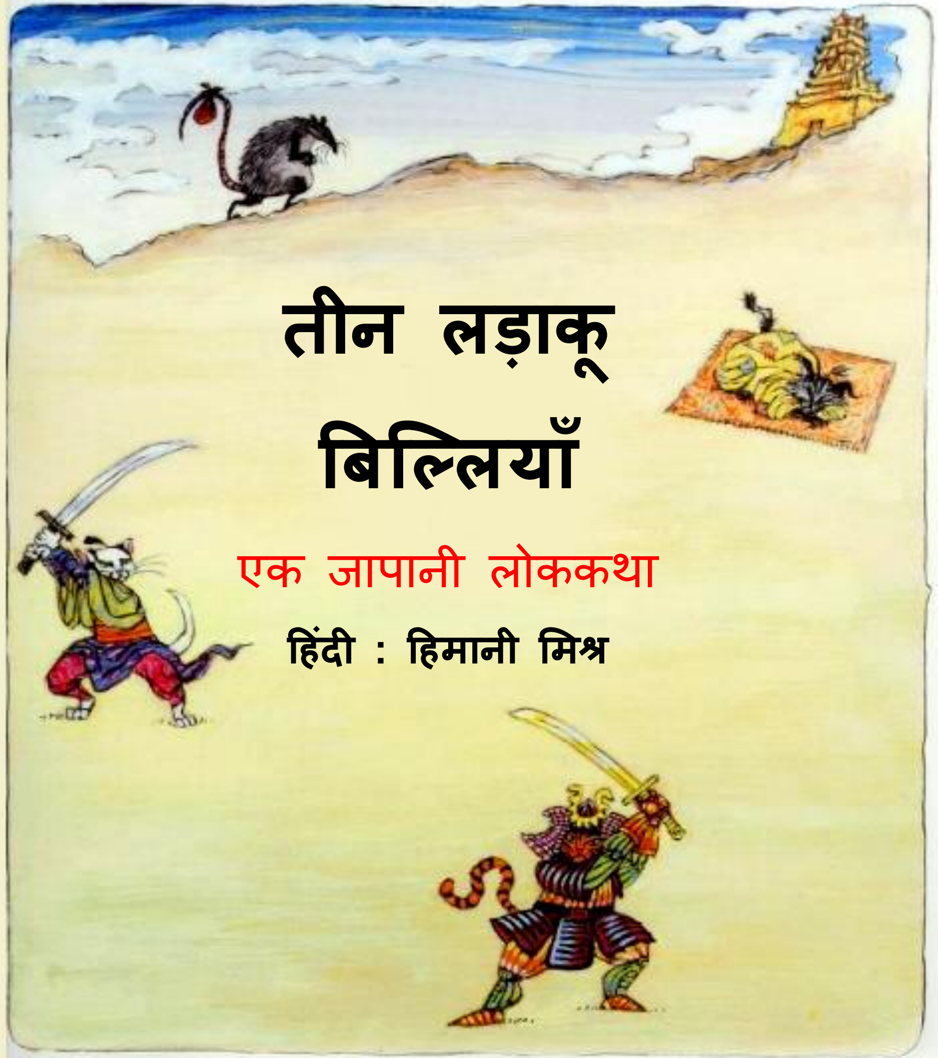
तीन लड़ाकू बिल्लियाँ

एक जापानी लोककथा





तीन लड़ाकू बिल्लियाँ

एक जापानी लोककथा

हिंदी : हिमानी मिश्र

तीन लड़ाकू बिल्लियाँ

एक जापानी लोककथा

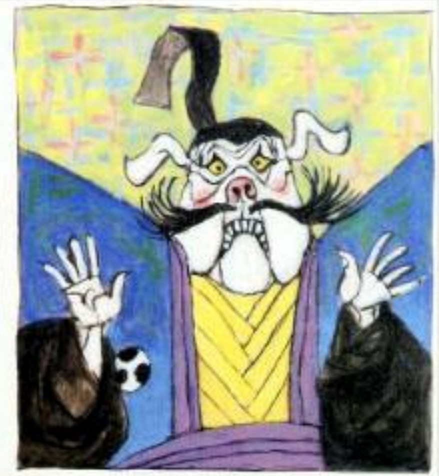






एक ज़माने में दाइम्यो नाम के शक्तिशाली राजा थे, जिनके महल पर एक जंगली चूहे ने कब्ज़ा जमा रखा था।

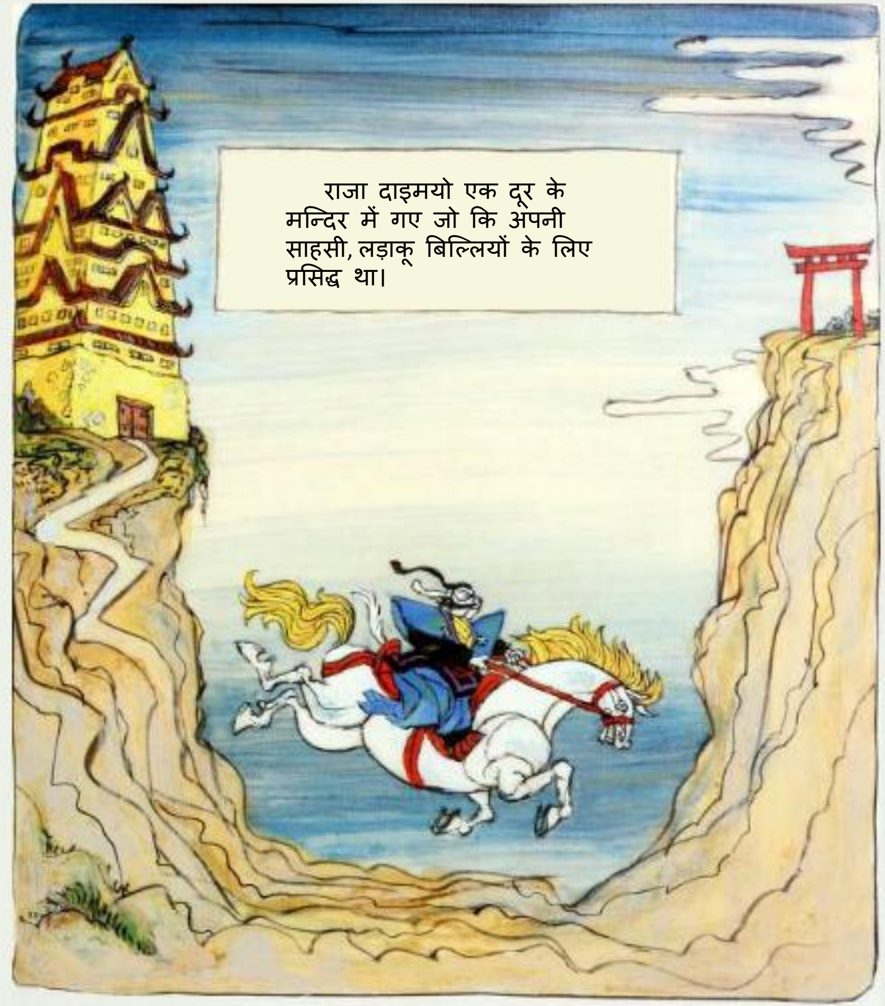
राजा दाईम्यो ने उस चूहे को महल से बाहर करने के अनेकों प्रयास किए। पर कुछ भी कारगर नहीं हो पाया। चूहा उनके बिछाए जाल पर हंसता, ज़हर को भी नज़रअंदाज़ करता, यहाँ तक कि वो महल की रखवाली करने वाले कुत्तों पर भी हमला करने से बाज़ नहीं आता।








"यह महल अब मेरा नहीं रहा," राजा ने परेशान होकर कहा, "अब ये चूहा ही यहाँ शासन कर रहा है, मैं नहीं। मुझे जल्दी ही इसे महल से बाहर करने का कोई उपाय खोजना होगा"।


राजा दाइमयो एक दूर के मन्दिर में गए जो कि अपनी साहसी, लड़ाकू बिल्लियों के लिए प्रसिद्ध था।



राजा मन्दिर में गए और वहां के प्रमुख पुजारी दोचो को प्रणाम किया।

उन्होंने कहा, "दोचो, मुझे आपकी मदद चाहिए”।

“एक जंगली चूहे ने मेरे महल पर कब्ज़ा कर लिया है। लड़ाकू बिल्लियों को भेजकर उस चूहे को महल से बाहर कर दीजिए”।

"मेरे पास बिल्कुल वही लड़ाकू बिल्ला है, जो तुम्हे चाहिए। परन्तु वह अभी किसी और लक्ष्य पर है“, दोचो ने कहा। "वह कुछ दिन में वापस आ जाएगा, फिर मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा”।

कुछ दिन बाद लड़ाकू बिल्ला महल के द्वार पर आया।

"मुझे पुजारी दोचो ने भेजा है" बिल्ले ने राजा से कहा, "चूहा कहाँ है?"

"वह मुख्य भवन में है, मेरे साथ आओ"। राजा दाईमयो बिल्ले को महल के मुख्य भवन में लेकर आए। उन्होंने देखा कि चूहा सिपाहियों से लड़ रहा था।







लड़ाकू बिल्ले ने अपनी तलवार निकाली और कहा, "शत्रु!!! मैं तुझे यहां से भगाने आया हूँ"।

जंगली चूहे ने कहा, "तुम कोशिश कर सकते हो"।

इस पर बिल्ले ने हमला कर दिया।



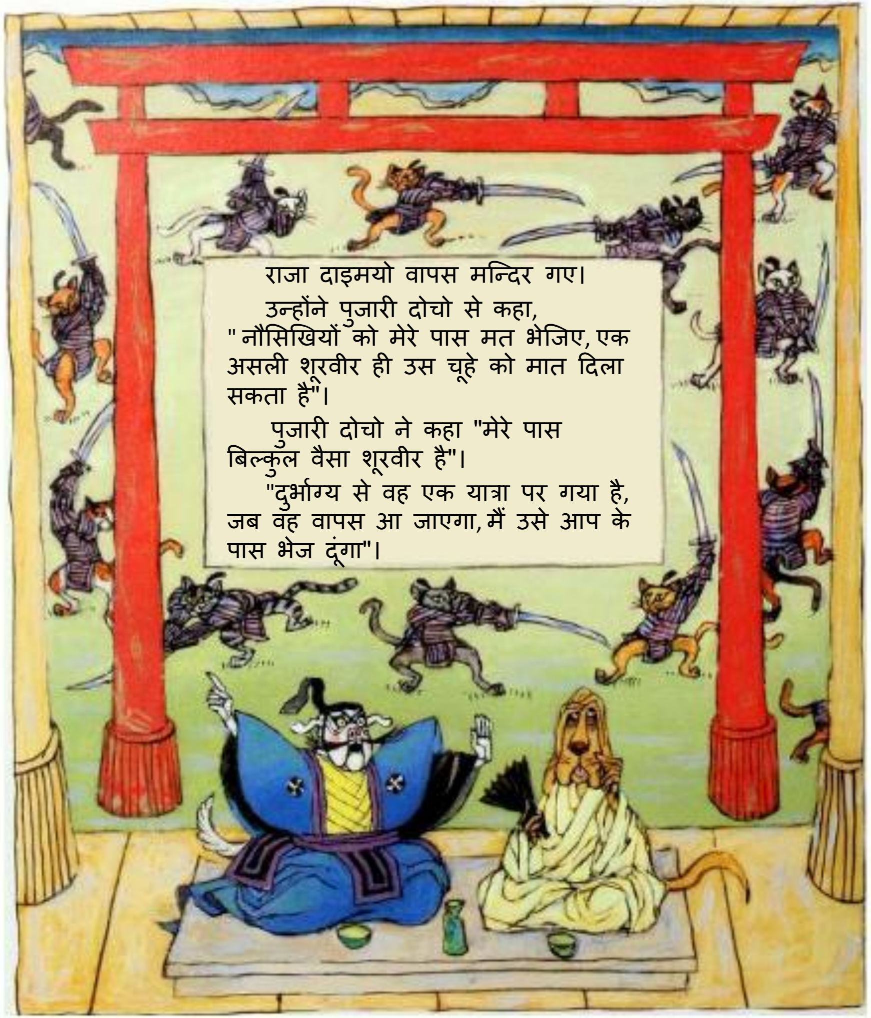




चूहा बड़ी तेज़ी से बगल हट गया और उसने अपने डंडे से बिल्ले के पैरों के बीच प्रहार किया। बिल्ला गिर पड़ा।

"तुम्हे अब यहां से चले जाना चाहिए", चूहे ने कहा।

अपमानित बिल्ला सर झुकाकर वहां से चला गया।



राजा दाइमयो वापस मन्दिर गए।

उन्होंने पुजारी दोचो से कहा, "नौसिखियों को मेरे पास मत भेजिए, एक असली शूरवीर ही उस चूहे को मात दिला सकता है"।

पुजारी दोचो ने कहा "मेरे पास बिल्कुल वैसा शूरवीर है"।

"दुर्भाग्य से वह एक यात्रा पर गया है, जब वह वापस आ जाएगा, मैं उसे आप के पास भेज दूंगा"।

दो सप्ताह बाद एक दूसरा बिल्ला महल आया।

यह बिल्ला पिछले बिल्ले से दोगुना बड़ा और सर से लेकर पांव तक शस्त्रों से सुसज्जित था ।

"अहा!" राजा। ने खुशी से कहा, “चलो अन्त में एक असली लड़ाकू मिला”।

राजा बिल्ले को महल के मुख्य भवन में लेकर गए।

चूहा अपनी परछाई से मुक्केबाजी का अभ्यास कर रहा था।

बिल्ले ने कहा, " तुम्हें यहां से जाना होगा"।

चूहे ने उत्तर दिया," तुम्हें मुझे यहां से भागना होगा"।

बिल्ले के कहा, "वह मैं कर सकता हूँ"।

चूहे ने उत्तर दिया," इस बात को लेकर तुम इतने निश्चित कैसे हो"?





देखो! मैं इन तकनीकों में माहिर हूँ। बिल्ले ने अपनी तलवार निकाली और तलवारबाजी का प्रदर्शन करने लगा।

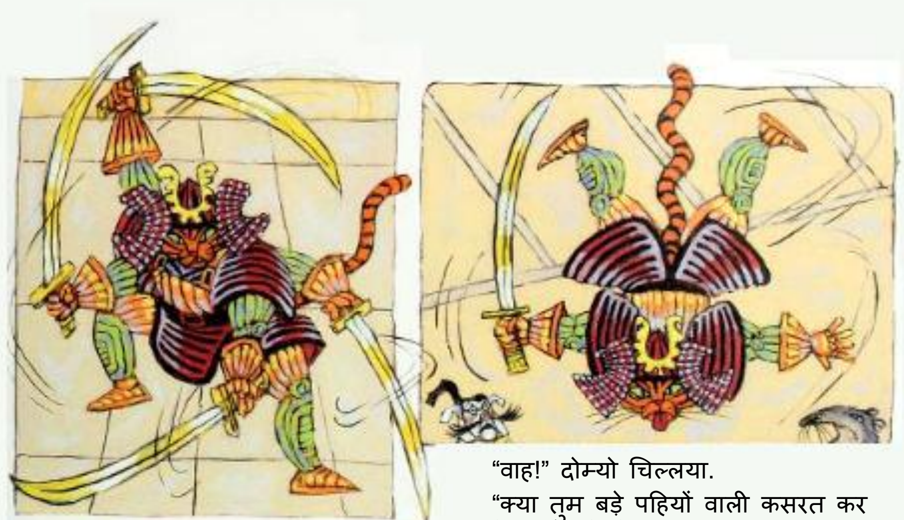
"बहुत खूब!" राजा ने तारीफ़ की।

चूहे ने पूछा, "क्या तुम ये तकनीक दिखा सकते हो जो मुझे आती हैं?"

हाँ, ज़रूर। बिल्ले ने अपनी तलवार तानी और तकनीक दिखाने को तैयार हो गया।







“वाह!” दोम्यो चिल्लया.

“क्या तुम बड़े पहियों वाली कसरत कर सकते हो?” चूहे ने पूछा.

“हाँ, बिल्कुल,” फिर बिल्ली ने म्यान से तलवार निकाली और कुछ दांव-पेंच दिखाए.





बिना किसी चेतावनी के चूहे ने हमला बोल दिया।

चूहे ने बिजली की तेज़ी से लात मारकर बिल्ले को भवन के दूसरी ओर फेंक दिया।

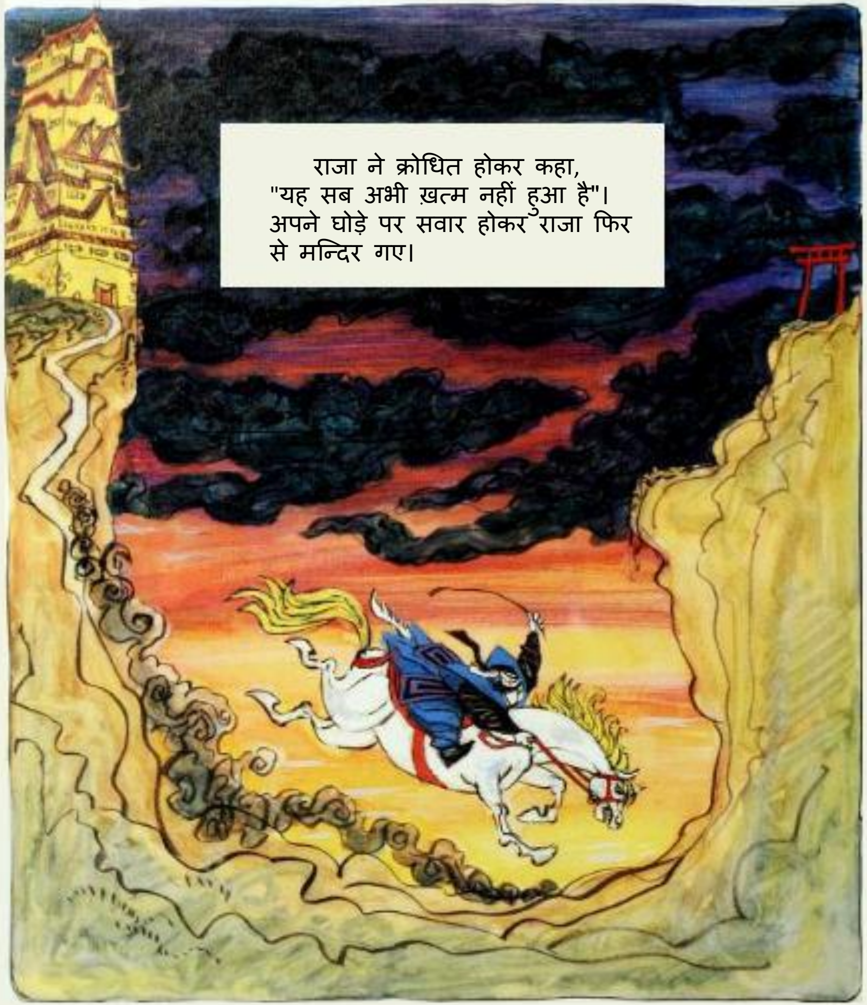


"फिर वही हाल", अब राजा रो पड़े।

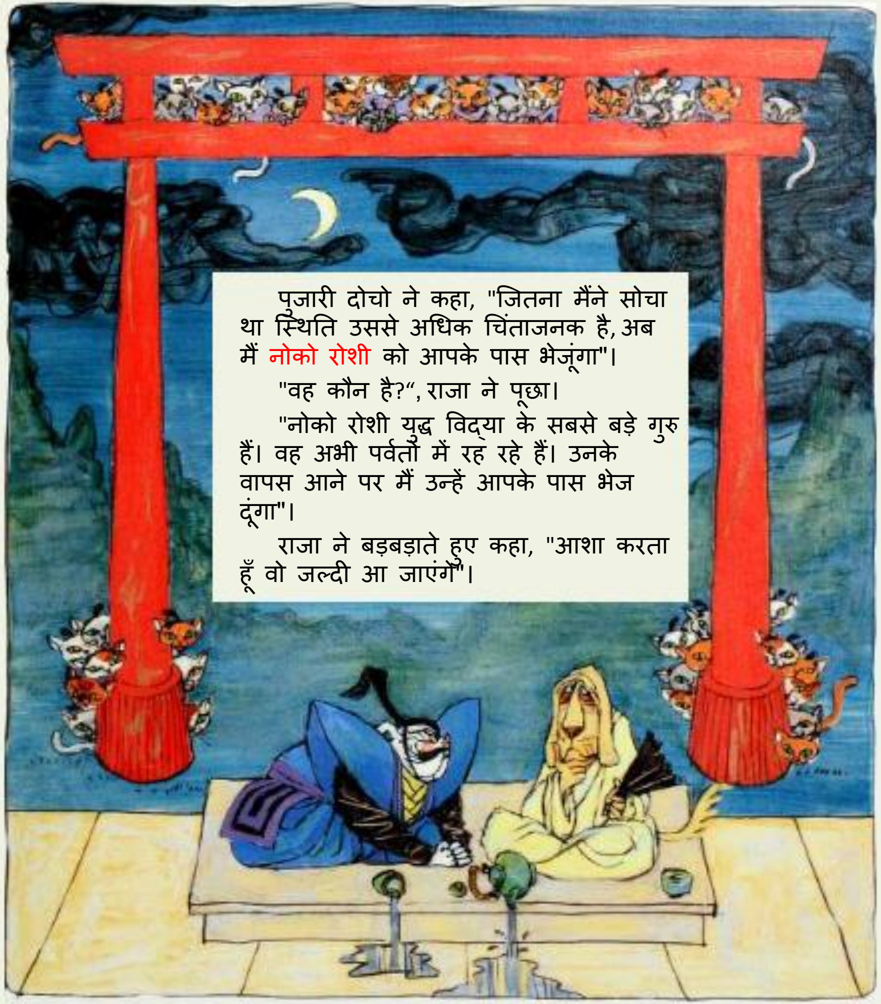
बिल्ले ने खुद को सम्हालते हुए साँस ली और सर झुकाकर महल से चला गया।

चूहे ने राजा से कहा, "तुम्हें भी अब हार मान लेनी चाहिए, कोई भी लड़ाकू बिल्ला मुझे हरा नहीं सकता"।





राजा ने क्रोधित होकर कहा, "यह सब अभी ख़त्म नहीं हुआ है"। अपने घोड़े पर सवार होकर राजा फिर से मन्दिर गए।



पुजारी दोचो ने कहा, "जितना मैंने सोचा था स्थिति उससे अधिक चिंताजनक है, अब मैं नोको रोशी को आपके पास भेजूंगा"।

"वह कौन है?", राजा ने पूछा।

"नोको रोशी युद्ध विद्या के सबसे बड़े गुरु हैं। वह अभी पर्वतों में रह रहे हैं। उनके वापस आने पर मैं उन्हें आपके पास भेज दूंगा"।

राजा ने बड़बड़ाते हुए कहा, "आशा करता हूँ वो जल्दी आ जाएंगे"।

पाँच सप्ताह बाद एक बूढ़ा बिल्ला महल के द्वार पर आया। उसने फटे पुराने कपड़े पहने हुए थे। उसके दांत भी नहीं थे। उसकी पूंछ तक बुरी हालत में थी।

वह लड़खड़ाते हुए चल रहा था। राजा ने खुद से कहा, "इससे बूढ़ा व निर्बल बिल्ला मैंने कभी नहीं देखा"। राजा को और अधिक आश्चर्य तब हुआ जब बिल्ले ने कहा, "मैं नेको रोशी हूं, मुझे पुजारी दोचो ने भेजा है"।



राजा ने हंसते हुए कहा, "तुम!?, पुजारी दोचो मज़ाक कर रहे होंगे"।

बिल्ले ने कहा, "पुजारी दोचो कभी किसी के साथ मज़ाक नहीं करते, क्या आप किसी चूहे को भागना चाहते हैं? मैं उसे भगा सकता हूं, पर यह काम मेरे अनुसार होना चाहिए"।

राजा ने कहा, "जैसी आपकी इच्छा, क्या आप चूहे को देखना चाहेंगे, वह मुख्य भवन में अपनी छड़ी से लड़ाई की तैयारी कर रहा है"।





"नहीं, पर मैं भोजन करके थोड़ा आराम करना चाहूंगा", बिल्ले ने कहा।

राजा ने एक दरी और भोजन बिल्ले के पास भिजवा दिया। बिल्ले ने भोजन किया, अपने तलवे चाटे और लेटते ही सो गया।



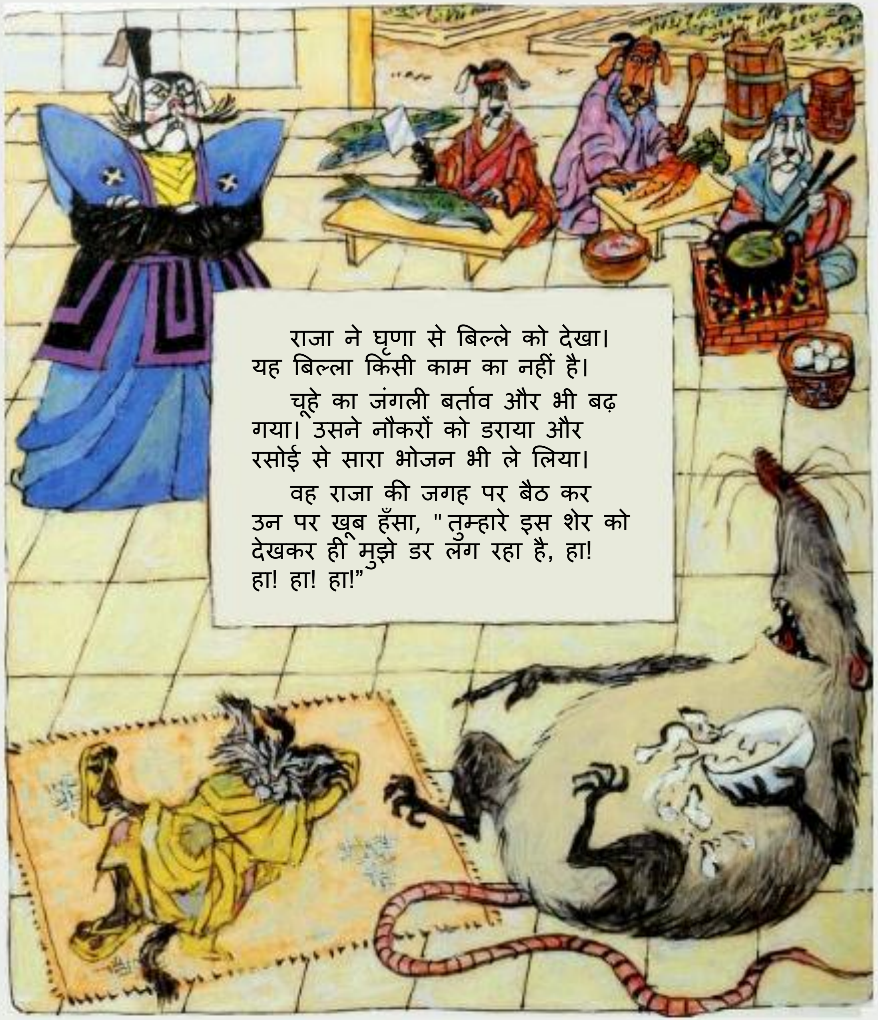




चूहा बिल्ले के पास आया और बोला, "तुम लड़ना नहीं चाहते हो"?

बिल्ले ने एक आँख खोली और फिर बंद करके कहा, "आज नहीं"। "तो कल"?

"शायद", बिल्ले ने कहा।



राजा ने घृणा से बिल्ले को देखा। यह बिल्ला किसी काम का नहीं है।

चूहे का जंगली बर्ताव और भी बढ़ गया। उसने नौकरों को डराया और रसोई से सारा भोजन भी ले लिया।

वह राजा की जगह पर बैठ कर उन पर खूब हँसा, "तुम्हारे इस शेर को देखकर ही मुझे डर लग रहा है, हा! हा! हा! हा!"





कई सप्ताह बीत गए। बिल्ले ने खाने और सोने के अलावा कुछ भी नहीं किया।

चूहा बीच बीच में आकर बिल्ले से पूछता रहता, "क्या अब लड़ना चाहते हो"?
पर बिल्ले का उत्तर हमेशा ना होता।

कुछ समय बाद, चूहे ने यह पूछना बंद कर दिया। वह पूरे महल में अपनी मर्ज़ी से घूमता। यहां तक कि वो बिल्ले के कटोरे से भोजन ले लेता, पर बिल्ले ने उसे कभी रोकने की कोशिश नहीं की ।





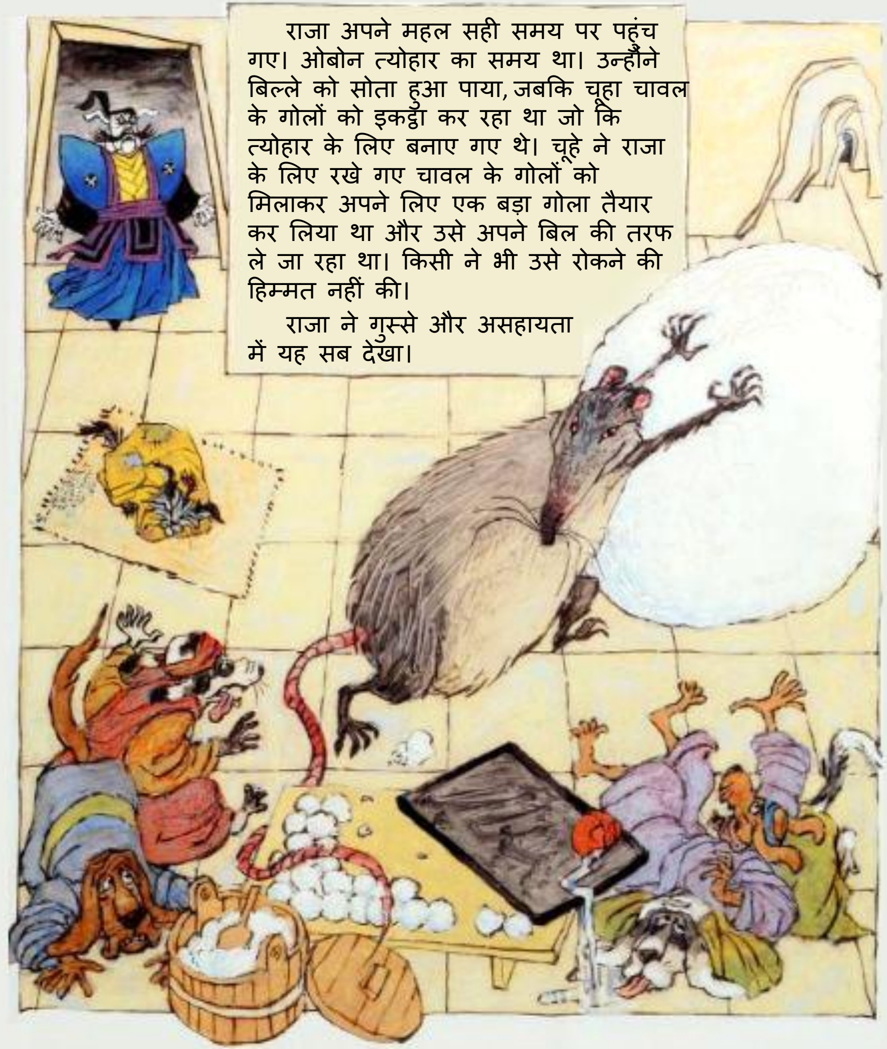
राजा दाइमयो से यह सब और सहन नहीं हुआ। वह मन्दिर गए और पुजारी पर चिल्लाने लगे, "मुझे बेवकूफ क्यों बनाया, वह बेकार बिल्ला एक लड़ाकू कैसे हो सकता है? वह किसी काम का नहीं है, बिल्ले का एक खिलौना उससे बेहतर होता"।

पुजारी ने उत्तर दिया, "नेको रोशी के काम करने का तरीका अलग है। शान्त रहिए, आपको जल्द ही उस चूहे से छुटकारा मिल जाएगा"।



राजा अपने महल सही समय पर पहुंच गए। ओबोन त्योहार का समय था। उन्हौंने बिल्ले को सोता हुआ पाया, जबकि चूहा चावल के गोलों को इकट्ठा कर रहा था जो कि त्योहार के लिए बनाए गए थे। चूहे ने राजा के लिए रखे गए चावल के गोलों को मिलाकर अपने लिए एक बड़ा गोला तैयार कर लिया था और उसे अपने बिल की तरफ ले जा रहा था। किसी ने भी उसे रोकने की हिम्मत नहीं की।

राजा ने गुस्से और असहायता में यह सब देखा।



पर बिल्ले ने हमेशा की तरह अभी भी कुछ नहीं किया। अचानक चूहे का पैर दरी में अटक गया और वो गिरकर अपने ही चावल के गोले नीचे दब गया।

"मेरी मदद करो", चूहा चिल्लाया।





बिल्ले ने अपनी आंखें खोलीं, अपनी मूछों को ताव दिया, कमर सीधी की और कुशन से बाहर कूदा।

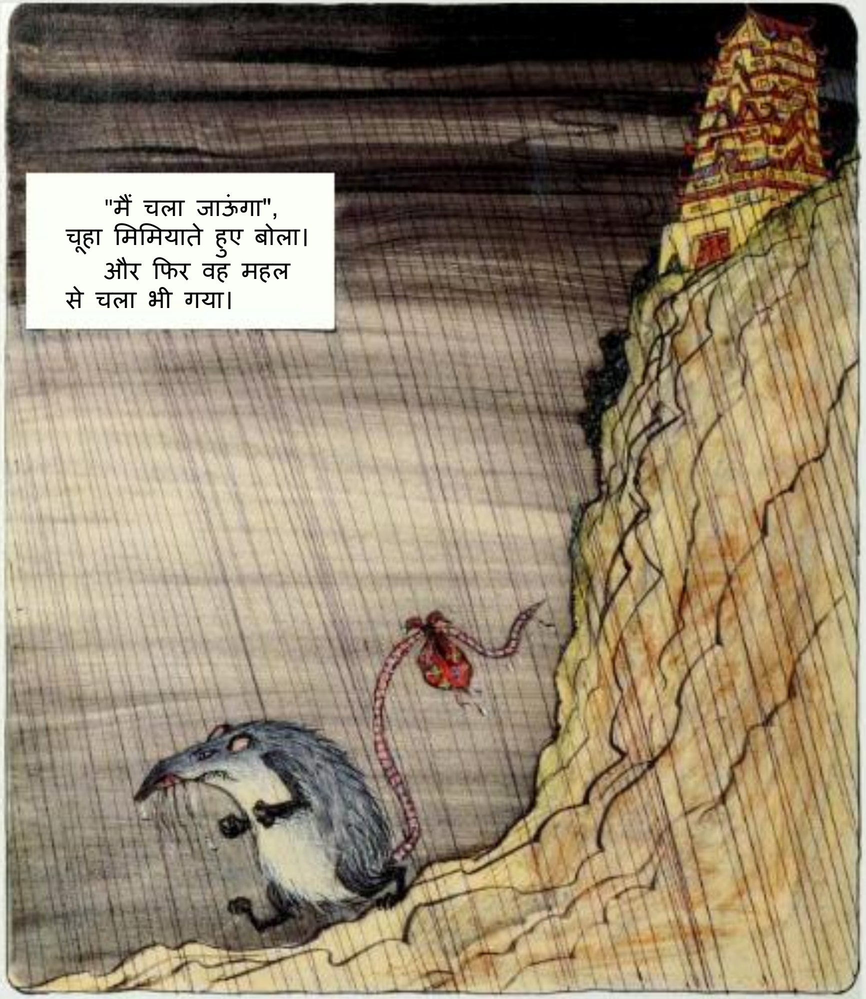
बिल्ले ने कहा, "मैं तुम्हारी मदद कर दूंगा, पर तुम्हें यह महल छोड़कर जाने का वचन देना होगा"।

"और अगर मैंने वचन ना दिया तो"?

बिल्ले ने अपना एक पंजा आगे बढ़ाया और चूहे की आँख पर वार किया।

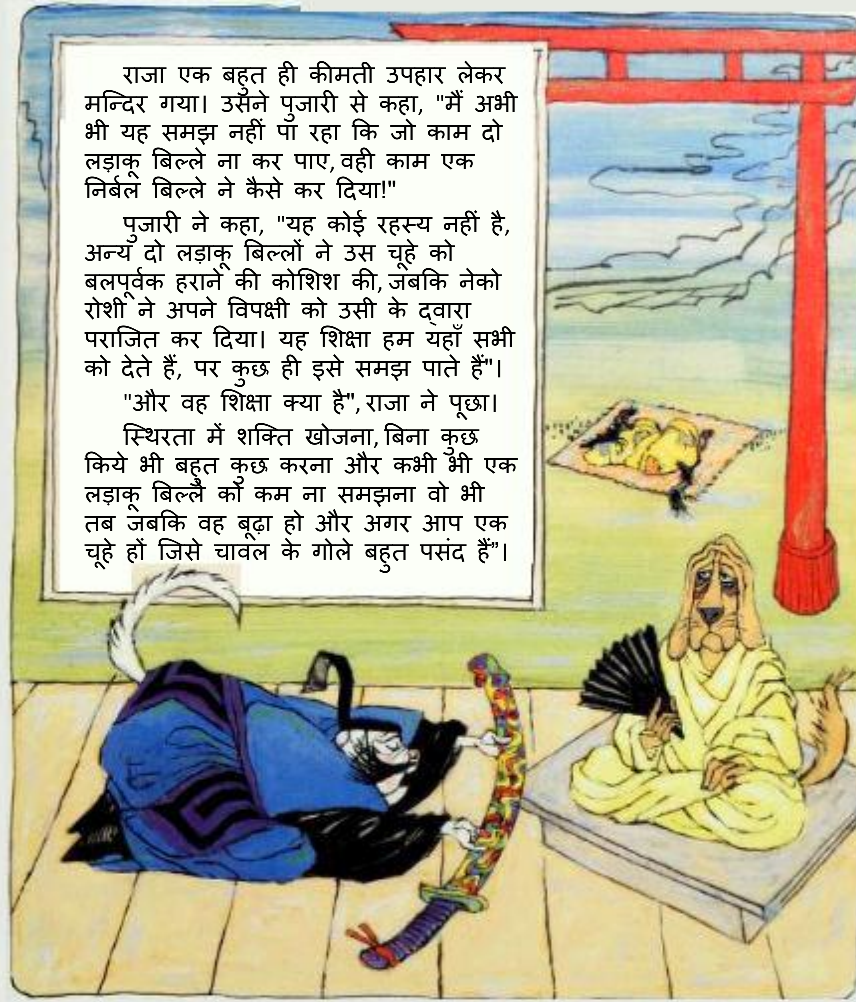






"मैं चला जाऊंगा",
चूहा मिमियाते हुए बोला।

और फिर वह महल
से चला भी गया।



राजा एक बहुत ही कीमती उपहार लेकर मन्दिर गया। उसने पुजारी से कहा, "मैं अभी भी यह समझ नहीं पा रहा कि जो काम दो लड़ाकू बिल्ले ना कर पाए, वही काम एक निर्बल बिल्ले ने कैसे कर दिया!"

पुजारी ने कहा, "यह कोई रहस्य नहीं है, अन्य दो लड़ाकू बिल्लों ने उस चूहे को बलपूर्वक हराने की कोशिश की, जबकि नेको रोशी ने अपने विपक्षी को उसी के द्वारा पराजित कर दिया। यह शिक्षा हम यहाँ सभी को देते हैं, पर कुछ ही इसे समझ पाते हैं"।

"और वह शिक्षा क्या है", राजा ने पूछा।

स्थिरता में शक्ति खोजना, बिना कुछ किये भी बहुत कुछ करना और कभी भी एक लड़ाकू बिल्लै को कम ना समझना वो भी तब जबकि वह बूढ़ा हो और अगर आप एक चूहे हों जिसे चावल के गोले बहुत पसंद हैं"।


जब बल से दुश्मन
को न हरा पाओ,
तब फिर अकल
और विवेक का
इस्तेमाल करो!